मधुबन ओम् शान्ति अंक 361 अगस्त 2022

पत्र-पुष्प

"अपनी पवित्र मन्सा व शुद्ध वृत्ति द्वारा स्व के साथ व्यक्ति और प्रकृति का परिवर्तन करो"

दादी जी की शुभ प्रेरणायें 24-07-22

परम पवित्र, परमप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सम्पूर्ण पवित्रता के व्रत को धारण कर महानता का अनुभव करने वाले, पवित्रता की शक्ति द्वारा व्यक्ति और प्रकृति का परिवर्तन करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ रक्षाबंधन वा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की सबको बहुत-बहुत हार्दिक बधाईयां।

हर वर्ष संगमयुग के इन यादगार त्योहारों पर विशेष ईश्वरीय सेवाओं की खूब धूम मचती है। पवित्र बहिनें सबको स्नेह का रक्षा सूत्र बांध कर स्नेही सहयोगी बना देती हैं। समय प्रमाण प्यारे बापदादा की हम सर्व ब्राह्मण बच्चों प्रति यही पहली श्रीमत है कि बच्चे, अब पवित्रता की ऐसी पर्सनैलिटी धारण करो जो आपकी इनर्जी, समय, संकल्प सब सफल होता रहे। कुछ भी व्यर्थ न जाए। छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखो। अपवित्रता की बातों को सुनते हुए भी न सुनो, न देखो।

बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें, बापदादा की स्मृतियों में रक्षा सूत्र बंधवाते स्वयं से यही पक्का वायदा करेंगे ना! पवित्रता की सहज धारणा के लिए यही स्मृति सदा रहे कि मैं अनादि, आदि रीयल रूप में पवित्र आत्मा हूँ। किसी को भी देखो तो उसके भी अनादि आदि रीयल रूप को देखो। रीयल को रियलाइज करो, तो अपवित्र संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होगी। बाबा कहते बच्चे, आप पावन आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें, विशेष आत्मायें, विश्व में महान् आत्मायें हो, सबसे बड़े ते बड़ी महानता है ही पावन बनना। सभी लोग आज भी इसी महानता के आगे सिर झुकाते हैं। तो हर एक अपनी बहुत सूक्ष्म चेकिंग करना और दृढ़ता की प्रतिज्ञा द्वारा व्यर्थ सोचना, व्यर्थ बोलना, व्यर्थ देखना... इस व्यर्थ की माया से मुक्त हो जाना। अब समय बहुत फास्ट गति से प्रतिज्ञा, परिवर्तन और प्रत्यक्षता के समीप पहुंच रहा है, इसलिए सभी बाबा के बच्चों को विशेष अटेन्शन रख, हर ईश्वरीय नियम और मर्यादा का पालन करते हुए, अपनी श्रेष्ठ मन्सा द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करनी है। हलचल के वातावरण में स्वयं को अचल-अडोल एकरस रखने के लिए विशेष अन्तर्मुखी बन निरन्तर योगी बनकर रहना है। यही स्वयं की और सर्व की सेफ्टी का साधन है।

बाकी इस समय मधुबन के सभी स्थानों पर योग तपस्या के साथ-साथ कुछ वी.आई.पीज़ के लिए राजयोग शिविर तथा विंग्स के छोटे-छोटे कार्यक्रम भी चलते रहते हैं। सभी बाबा के घर में आकर खूब भरपूर होकर जाते हैं। भिन्न-भिन्न वर्गो द्वारा भी ''आजादी के अमृत महोत्सव'' के उपलक्ष्य में पूरे भारत में सेवाओं की अच्छी धूम मची हुई है। करनकरावनहार बाबा अव्यक्त वतन से बहुत गुप्त रीति से अनेकानेक वन्डरफुल सेवायें करवा रहे हैं। यह प्रभू लीला देख वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह के गीत निकलते रहते हैं। अच्छा!

आप सभी को भविष्य महाराजकुमार श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की भी बहुत-बहुत बधाईयां।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

पवित्रता के महत्व को जान महान बनो

1) पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के जीवन की महानता है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है। जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वांस चलना आवश्यक है। श्वांस नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउन्डेशन पवित्रता है, इसलिए सम्पूर्ण पवित्रता के व्रत को दृढ़ता से पालन करो।

2) पवित्रता ब्राह्मण जन्म का स्वधर्म है। पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का लक्ष्य और लक्षण है। ब्राह्मणों का धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है – सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र न हो। इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएं पर धर्म न जाए।' किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे, पीछे नहीं हटेंगे।

3) आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार पवित्रता है, पूज्य-पद पाने का आधार भी पवित्रता है। ब्राह्मण जीवन का जीय-दान ही पवित्रता है। अनादि आदि स्वरूप भी पवित्रता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। ब्राह्मण जीवन की महानता पवित्रता है। ऐसी महान चीज़ को दृढ़ता से अपनाओ।

4) यह पवित्रता आपके जीवन का वरदान है, अपनी निज़ी वस्तु है। पराई चीज़ अपवित्रता है न कि पवित्रता। बाप का वरदान पवित्रता है, रावण का श्राप अपवित्रता है। आपका स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म पवित्रता है, आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे।

5) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है, जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति की अनुभूति अवश्य होगी। मन्सा संकल्प में पवित्रता है तो मन्सा में सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति होगी। पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है सदा स्वयं भी सुख-शान्ति स्वरूप और दूसरों को भी सुख-शान्ति की प्राप्ति का अनुभव कराने वाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर सदा सुख, शान्ति और शीतलता की किरणें फैलाने वाली होगी।

6) पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते हो। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है - प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन - इतना प्रभाव है मन्सा पवित्रता की शक्ति का।

7) फर्स्ट वा एयरकन्डीशन में जाने का सिर्फ एक संकल्प का साधन है, वह एक संकल्प है -'मैं हूँ ही ओरीज्नल पवित्र आत्मा।' ओरीज्नल स्वरूप अपवित्रता नहीं है। अनादि और आदि दोनों काल का ओरीज्नल स्वरूप पवित्र है। अपवित्रता तो आर्टीफिशल है, रीयल नहीं है। शूद्रों की देन है। शूद्रों की चीज़ ब्राह्मण कैसे यूज़ कर सकते।

8) वरदाता और वरदानी आत्मायें दोनों सदा कम्बाइन्ड रूप में रहें तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिमान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो। सिंगल नहीं, जब सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है। नहीं तो पवित्रता का सुहाग और श्रेष्ठ भाग्य सदा आपके साथ है।

9) सदा यह संकल्प रखो कि मैं अनादि आदि रीयल रूप में पवित्र आत्मा हूँ। किसी को भी देखो तो उसका भी अनादि आदि रीयल रूप देखो। रीयल को रियलाइज करो, तो अपवित्र संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होगी।

10) दु:ख-अशान्ति की उत्पत्ति अपवित्रता से होती है। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दु:ख अशान्ति कहाँ से आई। आप सब

पतित-पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित-पावन हो, तो जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं, वह स्वयं तो पावन होंगे ही। ऐसी पावन पवित्र आत्माओं के पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। तो पावन आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें, विशेष आत्मायें, विश्व में महान् आत्मायें हैं, सबसे बड़े ते बड़ी महानता है ही पावन बनना। आज भी इसी महानता के आगे सभी सिर झुकाते हैं।

11) प्रतिज्ञा करो कि कभी किसी रूप में भी, किसी भी परिस्थिति में माया से हारेंगे नहीं लेकिन लड़ेंगे और विजयी बनेंगे। मायाजीत बनकर दिखायेंगे। 2- मन, वाणी और कर्म में पवित्र रहकर अपने आपको सम्पूर्ण सतोप्रधान बनाकर दिखायेंगे। ''एक बाप दूसरा ना कोई'', इस व्रत को धारण कर प्रवृत्ति, परिस्थिति वा प्रकृति के किसी भी विघ्न के वश नहीं होंगे।

12) अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो अपवित्रता और विस्मृति का नाम-निशान समाप्त हो जायेगा। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है, अब इसकी अविद्या होनी चाहिए क्योंकि यह संस्कार व स्वरूप आपका नहीं है बल्कि आपके पूर्व जन्म का था। अभी आप ब्राह्मण हो, ये तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप है, ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरे के संस्कार अनुभव होना, इसको कहा जाता है – न्यारा और प्यारा।

13) जैसे देह और देही दोनों अलग-अलग दो वस्तुएं हैं, लेकिन अज्ञान-वश दोनों को मिला दिया है; मेरे को मैं समझ लिया है और इसी गलती के कारण इतनी परेशानी, दु:ख और अशान्ति प्राप्त की है। ऐसे ही यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो ब्राह्मणपन के नहीं, शूद्रपन के हैं, इनको भी मेरा समझने से माया के वश हो जाते हो और फिर परेशान होते हो।

14) बाप-समान बनना है वा बाप के समीप जाना है तो अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार न करे। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: स्वरूप में हो। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे नहीं आओ।

15) आप सबकी पहली प्रवृत्ति है अपने देह की प्रवृत्ति, फिर है देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति। तो पहली प्रवृत्ति - देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की हो, चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र नहीं बना सकेंगे। तो पहले अपने आपसे पूछो कि अपने शरीर रूपी घर को अर्थात् संकल्पों को, बुद्धि को, नयनों को और मुख को रुहानी अर्थात् पवित्र बनाया है? ऐसी पवित्र आत्मायें ही महान हैं।

16) आपके तन की पवित्रता सदा रुहानी खुशबू का अनुभव कराये, मन की पवित्रता अर्थात् मन में किसी भी प्रकार का अशुद्ध संकल्प न चले। मन में सदा मन्मनाभव के मन्त्र की स्मृति रहे। मन सदा विश्व की सेवा में लगा रहे। दिल की पवित्रता सच्चाई-सफाई है। अपने स्व-उन्नति अर्थ जो भी, जैसा भी पुरुषार्थ है, वह सच्चाई से बाप के आगे रखना। सेवा में स्वार्थ भाव न हो। सेवा करना कोई ड्यूटी नहीं है लेकिन निजी संस्कार है, स्व-धर्म है, स्व-कर्म है - इस स्मृति से सेवा करने वाले ही स्वच्छ अर्थात् पवित्र हैं।

17) सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प में भी कोई विकार टच न हो। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता है, ऐसे मन-बुद्धि में किसी भी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग, इसको भी अपवित्रता कहा जाता है। पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी किसी की बुराई को टच नहीं करते। जैसे वैष्णव कभी बुरी चीज़ को टच नहीं करते हैं, ऐसे ब्राह्मण वैष्णव आत्मायें बुराई को भी टच नहीं कर सकती।

18) इस ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की ऐसी पर्सनैलिटी धारण करो जो आपकी इनर्जी, समय, संकल्प सब सफल होता रहे। कुछ भी व्यर्थ न जाए। छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखना। अपवित्रता की बातों को सुनते हुए नहीं सुनना। देखते हुए नहीं देखना। जैसे जिन चीज़ों से आपका कनेक्शन नहीं है, उन्हें देखते हुए नहीं देखते हो। रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखते हो। साइड सीन समझ कर पार कर लेते हो, ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए नहीं देखो।

19) पावन तो आजकल के गाये हुए महात्मायें भी बनते हैं लेकिन आप श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें हाइएस्ट होली (पावन) बनते हो अर्थात् संकल्प-मात्र, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता वृत्ति को, दृष्टि को पावन स्थिति से नीचे नहीं ला सकती है। हर संकल्प अर्थात् स्मृति पावन होने के कारण वृत्ति, दृष्टि स्वत: ही पावन हो जाती है। न सिर्फ आप पावन बनते हो लेकिन प्रकृति को भी पावन बना रहे हो इसलिए पावन प्रकृति के कारण भविष्य अनेक जन्म शरीर भी पावन मिलते हैं।

20) निरन्तर अतीन्द्रिय सुख और स्वीट साइलेन्स की अनुभूति का विशेष आधार - पवित्रता है। पवित्रता नम्बरवार है तो इन अनुभूतियों की प्राप्ति भी नम्बरवार है। अगर पवित्रता नम्बरवन है तो बाप द्वारा अनुभूतियों की प्राप्ति भी नम्बरवन है।

21) ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज ही है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ ज्ञान दाता की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी पवित्रता और मर्यादायें हैं।

22) ब्राह्मण जीवन में पहले स्मृति की स्वच्छता अर्थात् पवित्रता चाहिए। उसके बाद वृत्ति और दृष्टि की। जब स्मृति में पवित्रता आ गई कि मैं पूज्य आत्मा हूँ तो पूज्य आत्मा अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी....उनकी दृष्टि में सभी के प्रति यही रहता कि यह परम पूज्य आत्मायें हैं वा पूज्य बनना है। किसी भी पूज्य आत्मा के प्रति यदि अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है तो यह महा-महा महापाप है जो वियोगी बना देती है।

23) आप ब्राह्मणों की सबसे पहली प्रवृत्ति है अपने देह की प्रवृत्ति। तो पहले इस प्रवृत्ति को अर्थात् देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की हो चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र प्रवृत्ति नहीं बना सकेंगे।

24) जितने भी ब्राह्मण हैं हरेक ब्राह्मण चैतन्य शालिग्राम का मन्दिर है, चैतन्य शक्ति मन्दिर है, ऐसे मन्दिर समझते हुए इनको शुद्ध पवित्र बनाओ। अभी के पुरुषार्थ के समय प्रमाण व विश्व के सम्पन्न परिवर्तन के समय प्रमाण इस समय कोई भी कर्मेन्द्रिय द्वारा प्रकृति व विकारों के वशीभूत नहीं होना चाहिए।

25) ''मैं परम पवित्र आत्मा हूँ'' इस श्रेष्ठ स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो तो सहज वरदानी बन जायेंगे। स्मृति में रहना ही सीट वा आसन है। तो सदा स्मृति रहे कि मैं हर कदम में पुण्य करने वाली पुण्य आत्मा, महान संकल्प, महान बोल, महान कर्म करने वाली महान आत्मा हूँ। जब इस आसन पर विराजमान होंगे तो कभी भी माया समीप आ नहीं सकती।

26) प्युरिटी की रॉयल्टी अर्थात् एकव्रता बनना, (एक बाबा दूसरा न कोई) इस ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पावन बनने के लिए एकव्रता का पाठ पक्का कर लो। वृत्ति में शुभ भावना, शुभ कामना हो, दृष्टि द्वारा हर एक को आत्मिक रूप में वा फरिश्ता रूप में देखो। कर्म द्वारा हर आत्मा को सुख दो और सुख लो। कोई दु:ख दे, गाली दे, इनसल्ट करे तो आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ।

27) ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है - सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करेगी, और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रायल्टी देने से छुड़ायेगी। इसी रॉयल्टी के अनुसार भविष्य रॉयल फैमली में आ सकेंगे। जैसे शरीर की पर्सनैलिटी देह-भान में लाती है, ऐसे प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही-अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है।

28) यदि वरदाता और वरदानी दोनों का सम्बन्ध समीप और स्नेह के आधार से निरन्तर हो और सदा कम्बाइन्ड रूप में रहो तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। जब अकेले होते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।

29) पवित्रता की शक्ति परमपूज्य बनाती है। पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन करते हो। पवित्रता की शक्ति विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बना देती है। आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है। पवित्रता के आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है। इसके महत्व को जानकर पवित्रता के लाइट का क्राउन धारण कर लो।

30) जो प्युरिटी की पर्सनैलिटी से सम्पन्न रॉयल आत्मायें हैं, उन्हें सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म से सभ्यता और सत्यता दिखाई देती है। तो नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे पर, चलन में वह रूहानी रॉयल्टी व सभ्यता दिखाई देती है या साधारण चलन और चेहरा दिखाई देता है?

31) जैसे दुनिया की रॉयल आत्मायें कभी छोटी-छोटी बातों में, छोटी चीज़ों में अपनी बुद्धि वा समय नहीं देती, देखते भी नहीं देखती, सुनते भी नहीं सुनती, ऐसे आप रूहानी रॉयल आत्मायें किसी भी आत्मा की छोटी-छोटी बातों में, जो रॉयल नहीं हैं उनमें अपनी बुद्धि वा समय नहीं दे सकते। रूहानी रॉयल आत्माओं के मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल भी नहीं निकल सकते। उनका हर बोल युक्तियुक्त, व्यक्त भाव से परे अव्यक्त भाव और भावना वाला होगा। तो अब ऐसी रूहानी रॉयल्टी और प्योरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो तब प्रत्यक्षता होगी।

"अन्तिम पेपर में पास होने की तैयारी"

(गुल्जार दादी जी 2007)

योग हमारी जीवन के परिवर्तन का आधार है। योग का अर्थ है याद। वैसे योग शब्द लोगों ने भिन्न-भिन्न रूप से उठा लिया है लेकिन याद करना तो सभी को आता है। हमारी याद में देह की याद के बजाए आत्मा को याद करना है और संसार की बातों को याद करने के बजाए बाबा की बातों को याद करना है। और मन बुद्धि के कनेक्शन को चेन्ज करके बाबा और ब्राह्मण परिवार से, बाबा से प्राप्तियाँ जो हुई हैं, होती हैं ज्ञान से, उसमें मन बुद्धि को ट्रांसफर करना है। तो बाबा ने नई बात नहीं बताई है जो मुश्किल हो।

तो समय प्रति समय सारे दिन में कई बार अपने को चेक करना है। अन्त में हमको चारों ओर के हलचल में अचल रहना पड़ेगा। अभी तो हमारा दिमाग स्थूल कर्म में है या तो जो भी क्रियाक्रम होता है, उसमें है या ज्ञान की सेवा में है लेकिन मैं समझती हूँ कि मेरा मन बुद्धि बहुत बिजी है, ऐसे टाइम पर भी हमको प्रैक्टिस करनी चाहिए। अगर हम मन को ऑर्डर दें, अभी बाबा की याद में एक सेकण्ड ठहर जाओ। एक सेकण्ड का भी टाइम नहीं है, यह कोई नहीं कह सकता है। जो खुद पढ़ाई में तेज होगा वो दूसरों को भी ऐसा ही पढ़ायेंगे।

तो मुख्य सबजेक्ट हमारी ज्ञान और योग है, जिससे विकर्म विनाश हों, जो कड़े संस्कार एक नेचर के रूप में हैं वो परिवर्तन हो। हम कहते हैं हमारा नया जन्म है, तो नये जन्म में पुराने जन्म की नेचर कहाँ से आई? मरजीवा अर्थात् मरे भी हैं तो जिंदा भी हैं। जैसे मिलेट्री वालों का हाथ पाँव ऑर्डर मानता है, ऐसे हमारा मन बुद्धि भी ऑर्डर मानना चाहिए। जब मेरा मन है, यह हमारी कर्मेन्द्रियाँ हैं तो वह हमारा ऑर्डर क्यों नहीं मानती? बाबा कहते तुम तो मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी हो, तो तुम्हारा मन तुम्हारा ऑर्डर नहीं मानता है? तुम्हारी बुद्धि, तुम जैसे चाहो वैसा जजमेन्ट नहीं करती, क्यों? तो मालिकपन का अधिकार कम है। अगर मालिक को मालिकपन का अधिकार ही स्मृति में न रहे तो उसका ऑर्डर कौन मानेगा! तो अभी से यह अभ्यास करो मन को ऑर्डर करो कि सेकण्ड में अशरीरी बन जाओ तो सचमुच अशरीरी बन जाओ।

पहले तो यह याद रहे कि मैं आत्मा हूँ तब कहेंगे मन मेरा है। आत्मा कहती है मेरा मन है। तो कौन-सी आत्मा हूँ? सिर्फ आत्मा हूँ, नहीं, आत्मा तो भिन्न-भिन्न प्रकार की है लेकिन उसमें से मैं कौन-सी आत्मा हूँ? मेरा स्वमान क्या-क्या है? पूरी लिस्ट सामने रखो तो वो नशा चढ़ेगा। जैसे मैं शिवबाबा (भगवान) के तख्तनशीन आत्मा हूँ तो कितना नशा चढ़ेगा! और वैराइटी स्वमानों की स्मृति में रहो तो बहुत खुशी होगी। समय प्रति समय जो भी होमवर्क मिले हैं वो घड़ी-घड़ी चेक करो और चेन्ज करो। ऐसे नहीं कि मैं काम में बिजी थी ना, तो याद ही नहीं आया कि मैं शरीर हूँ या आत्मा हूँ! उसी काम में कर्म-कॉन्सेस वाले हो गये इसलिए बाबा यही इशारा दे रहा है कि अन्तिम समय में आपका मन ऐसा कन्ट्रोल में आना चाहिए बस, संकल्प आया और हुआ। समझो अच्छा, क्षमा का सागर बनके सभी को शक्तियाँ देनी हैं। मैं जो संकल्प को ऑर्डर करूँ वही हमारी स्थिति हो जाये। तो इसमें चाहिए अपना पुरुषार्थ। यह पुरुषार्थ दूसरा कोई नहीं करा सकता है।

नॉलेज सबको एक जैसी मिलती है, लेकिन नॉलेज को प्रैक्टिकल में लाना माना अनुभव की अथॉरिटी में आते जाना। अगर मैं कहती हूँ मैं ही कोटों में कोई आत्मा हूँ, तो यह संकल्प करते ही ऑर्डर मिलते ही फौरन वो स्वरूप बन जायें। ऐसे नहीं कि संकल्प ही चलता रहे कि मैं कोटों में कोई आत्मा हूँ... सिर्फ सोचते ही रहें, लेकिन स्वरूप में नहीं आयें। जब इसके स्वरूप में आ जाओ तो क्या नशा होगा, कितनी अथॉरिटी होगी! मास्टर सर्वशक्तिवान की अथॉरिटी होगी! भगवान ने मुझे कोटों में कोई चुना है, तो वो नशा और खुशी स्वरूप में आनी चाहिए। इसलिए बाबा कहते स्वमान में स्थित रहो तो वो स्थिति मेरे स्वरूप में आवे और दिल माने भी, इसको कहते हैं अनुभव। तो जब तक हमको हर स्वमान का अनुभव नहीं हुआ तो लास्ट के समय यह अनुभव न होने के कारण धोखा हो जायेगा।

नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप यह कितनी बड़ी स्टेज है, जरा भी देह के भान में नहीं आवें। वास्तव में हम यह अभ्यास करें कि यह देह का रूप जो दिखाई देता है, यह मैं नहीं हूँ। जैसे यह याद रहता है कि मैं काली हूँ, गोरी हूँ, लम्बी हूँ, चौड़ी हूँ... लेकिन यह मैं तो नहीं हूँ ना। मैं नहीं हूँ यह मेरा है लेकिन मेरा इतना याद है और मैं भूला हुआ है, यह कितनी आश्चर्य की बात है। हमारे लिए तो यह और ही आश्चर्य की बात है क्योंकि कहलाते हैं हम परमात्मा के बच्चे हैं।

तो बाबा कहते हैं कुछ भी हो कोई भी बात हो, वायुमण्डल ऐसा है क्या करें, इसलिए योग नहीं लगता लेकिन वायुमण्डल बनाने वाले कौन? एक सूर्य सारे विश्व का वायुमण्डल बना सकता

है। वो सूर्य तो प्रकृति है और हम प्रकृतिपति हैं। एक सूर्य उदय होता तो सारे संसार को रोशनी कर देता। जब प्रकृति में भी इतनी ताकत है, अंधकार को रोशनी में बदल सकता है। मैं तो प्रकृतिपति हूँ ना। तो हम क्यों यह सोचते कि सेन्टर का वातावरण अच्छा नहीं है, हमेशा कोई न कोई खिटखिट चलती ही रहती है। हम कारण को देखते हैं तो यह बहाना है। तो हमको यह अभ्यास अभी से करना पड़ेगा।

कई कहते हैं अभी नहीं सुधरते हैं तो समय सुधारेगा, अपने लिए भी कहते हैं तो दूसरों के लिए भी कहते हैं। लेकिन उस समय कोई भी सुधर नहीं सकेंगे क्योंकि उस समय एक सेकण्ड का पेपर होगा और सेकण्ड कितने में पूरा हो जाता है, कुछ भी सोचा और सेकण्ड पूरा हुआ। तो बहुतकाल का अभ्यास हमारे काम में आयेगा। अभी तो बाबा वार्निंग दे रहा है, अचानक होना है, कल भी विनाश होने वाला होगा तो भी नहीं सुनाऊंगा क्योंकि समय प्रति समय प्रकृति अति तमोगुणी हो रही है। कुछ भी कन्ट्रोल में नहीं है। क्योंकि पांचों ही तत्व इकट्ठा अपना काम करेंगे, तो क्या हालत होगी? माया भी अपने फुल फोर्स में होगी और चारों ओर विनाश की हाहाकार होगी। ऐसे टाइम पर अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है, मन को ऑर्डर मानने की आदत नहीं होगी तो हम पास विथ ऑनर कैसे होंगे? ऐसे नाजुक समय पर कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर बहुत होनी चाहिए तभी तो मन बुद्धि ऑर्डर मानेंगे ना। इसलिए अभी कोई बहाना नहीं सोचो, यह हुआ वो हुआ ना... यह सब बहानेबाजी है। दूसरे को दोषी बनाके भी अपने को बचाव करने की कोशिश करते रहेंगे। तो यह बहुतकाल से हमारा अभ्यास चाहिए। अपने को अगर हम नहीं बनायेंगे तो दूसरों को कैसे बना सकेंगे? उन्हें तो ज्ञानी अज्ञानी साथ में रहना पड़ता है। सारे संसार के वायुमण्डल में रहना पड़ता है फिर भी हम उससे सेफ हैं। फिर भी उनमें से कोई न कोई तो लाल निकलता ही है। कितना अच्छा एकदम न्यारा और प्यारा होके, बाबा को एक्जाम्पल दिखा रहा है, लेकिन थोड़े। ऐसे वायुमण्डल में रहते भी तीव्र पुरुषार्थ में चले उसको बाबा वारिस कहता है। तन, मन, धन सब रीति से बाबा के हैं, तो कोई कोई ऐसे निकलते हैं। तो अन्त समय में मन को अपने तरफ खींचने वाली परिस्थितियाँ होंगी, मन को डगमग करने वाली हालतें होंगी। अगर अभी अच्छे चलते हुए हमारा मन कन्ट्रोल में नहीं है तो उस समय कैसे होगा? कोई समस्या अपने मन में हो जाती है तो एकदम परेशान हो जाते हैं, तो उस समय क्या होगा? क्योंकि हमको पास विथ ऑनर तो बनना है ना। हमारा लक्ष्य तो है बाप समान बनने का, न कि गेट पास लेके सिर्फ सतयुग में जाने का। तो गेट पास में ही खुश होने वाले हम नहीं हैं। हमें तो वहाँ सीट चाहिए क्योंकि बाबा से वायदा किया है - साथ है, साथ चलेंगे, साथ रहेंगे ब्रह्माबाबा के साथ तो रॉयल फैमिली में होंगे, राजधानी में होंगे तब तो साथ रहेंगे ना।

तब कहा कि कैसे भी टाइम निकाल करके यह अभ्यास करना ही है और बाप समान स्थिति बनाना ही है। इसलिए बाबा ने इस बारी याद की लिंक बनी रहे उसके लिए 5 स्वरूपों की, 8 बार ड्रिल करने को कहा है, जिससे आपका यह अभ्यास निरंतर चलता रहे। तो जो हमारी सम्पन्न स्थिति है उसका स्वरूप बनना ही है। और अपने मन की गति को सत्य और यथार्थ हम ही देख सकते हैं, दूसरा कोई नहीं देख सकता। इसलिए खुद ही अपने टीचर बनो क्योंकि 24 घण्टा आप ही अपने साथ रहते हो। मन को आप ही जान सकते हैं। उसके लिए तो अभी से अभ्यास करना पड़ेगा। तो अभी से चेक और चेंज यह स्वयं को मन्त्र दे दो। और जो कहते हो उसका अनुभव होना चाहिए। योग लगाने से क्या-क्या प्राप्तियाँ हैं, उन एक एक प्राप्तियों का मनन करते-करते मगन हो जाओ। ऐसे नहीं सिर्फ वर्णन ही करते रहो, अनुभव करके अनुभवी जरुर बनो और मन को ऑर्डर में चलाओ। मेरा मन है, मेरे संस्कार हैं, दूसरे का संस्कार नहीं है। मेरी बुद्धि है तो मेरे ऊपर तो मेरा अधिकार होता है ना। तो ये सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ भी मेरी हैं। तो चेक एण्ड चेंज और मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी की सीट पर बैठो। अच्छा – ओम् शान्ति।

(दादी जानकी जी की अमृतवाणी – 2006)

निश्चय के बल की कमाल - कितनी भी हिलाने वाली छोटी या मोटी बातें आये हिल नहीं सकते

आज बाबा ने कहा है - सतयुग से भी संगमयुग पर तुमको बड़ा मजा है। संगम पर स्वयं भगवान हमारे सामने है, उसके सामने हम बैठे हैं। वह हमारा बाप, शिक्षक, सतगुरू के रूप में पालना, पढ़ाई और श्रीमत पर चलने का अक्ल सिखा रहा है। दुनिया वाले अक्ल यूज़ करते हैं - मून तक जाने के लिए, हम अक्ल चूज करते हैं पूज्य देवता बनने के लिए।

आज बाबा ने कहा है तुमको याद में रहने की हॉबी हो गई है। एक तरफ कहता इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। तो पहले अपने आपको देखना है कि अन्दर कौन सी इच्छाये हैं? फिर हॉबी हो बाप को याद करने और सेवा करने की। शुद्ध श्रेष्ठ संकल्प और शुभ भावना से सेवा बहुत अच्छी होती है। निश्चय का बल

बहुत बड़ा है, हिलाने वाली बातें भले आयें लेकिन हिले नहीं, निश्चय के बल की कमाल है। बाबा ने ज्ञान सिर्फ समझने के लिए नहीं दिया है परन्तु ज्ञान से बाप में, स्वयं में इतना अच्छा निश्चय है जिसका बल हमको लक्ष्य तक पहुंचने में, स्वरूप बनने में बहुत मदद देता है।

बाबा कहता है बच्चे धीरज रखो। पुरुषार्थ गुप्त और तेज करो परन्तु धीरज भी रखो। तो वह दिन जल्दी आयेंगे, पुरुषार्थ करते चलो, करते चलो। पुरुषार्थ में थकावट, अलबेलाई न आये, यह ध्यान रखना है। हॉबी हो बाप को याद करने की। सारा दिन देखना मेरे को कौन सी हॉबी है? पहले तो विकर्म विनाश हो जाएं तो बड़ा काम उतर जायेगा। फिर ध्यान रखना है कि कोई ऐसा बोझ कर्म के हिसाब किताब का चढ़ न जाये, नहीं तो भारी हो जायेंगे। याद में रहने से पुराना खलास हो गया, जो राख है वह भी ज्ञान सागर में डाल दी। निशानी भी नहीं रही।

संगमयुग विजयी रत्नों में आने का है। यही टाइम है वैजयन्ती माला में आ जाऊं, भक्त सिमरण करें माला का, हम उस माला में आ जाऊं, यह सपना है या सच्चाई है? हम सतयुग स्थापन कर रहे हैं - यह हमारे लिए स्वप्न है या सच है? दोनों हैं। जो स्वप्न हैं वह सच हो रहे हैं। पहले संकल्प में, स्वप्नों में बाबा हो, बाबा ने क्या किया? सच्ची बातें सुना-सुना करके हमको सच्चा बना दिया है। स्वप्न में भी नहीं था हम यह बन सकते हैं। जैसे भागवत में गोप गोपियों का चरित्र है, बड़े प्यार से पढ़ते थे, वह हम हैं, गीता ज्ञान दाता ज्ञान सुना रहा है, वह हम सुन रहे हैं। स्वप्न में भी यही है, जीवन में भी यही है।

संगमयुग पर जो बाप को याद करने की हॉबी है, यह रीयली हमारे ऊपर जादू का काम करती है परन्तु जिस जादू ने हमारे पर काम किया है वह औरों पर भी काम कर रहा है, वह आँखें देख रही हैं, अनुभव कर रही हैं।

बाबा कहता तुम अपना पुरुषार्थ करते चलो औरों की चिंता मत करो। यह कब सुधरेंगे, क्या होगा... तुमको क्या पड़ी है? तुम अपनी धुन में लगी रहो, बाबा ने क्या किया है, वह करते चलो। सारे विश्व को परिवर्तन करने का, अधर्म नाश सतधर्म स्थापन करने का काम तो बाबा ने उठाया है। हम क्या कर रहे हैं? काम सारा बाबा का, हम सिर्फ प्रीत बुद्धि होकर रहें, यही अंगुली है। प्रीत बुद्धि की अंगुली और दृढ़ संकल्प है तो भावना का यह आवाज अन्दर से निकलता है कि यह हो जायेगा। तो बाबा को याद करने की, सेवा की हॉबी है.. सेवा भी क्या है? आप समान बनाने की या मुस्कराने की... यह सेवा, सेवा नहीं है, नेचुरल है, कोई मेहनत का काम नहीं है। चेहरा चलन ही सेवा करे यह ध्यान बाबा खिंचवाता है। चेहरे पर कभी आवेश के या थोड़ा सूक्ष्म ईर्ष्या के या नाराजगी के चिन्ह न आयें, नहीं तो सेवा, सेवा नहीं है। शुभचिंतन में रहकर सबके लिए शुभचिंतक बनने की जो हाबी है। वह सेवा करा रही है।

बाबा की याद में रहो, फिर कर्मयोगी बनकर कर्म करो तो चारों तरफ से सबकी दुआयें मिलती हैं। दिल से और दृष्टि से दुआ मिलती है। पहले दिल फिर दृष्टि। जो दुआ मांगने वाले हैं वह कहते हैं मेरे सिर पर हाथ रखो ना। मांगने वाला और कुछ नहीं कहता है, सिर्फ कहता है सिर पर ऐसा हाथ रखो जो दिमाग ठीक काम करे। बाबा ने हमारे सिर पर ऐसा हाथ रखा है जिससे समय पर बुद्धि ठीक काम करती है। तो बाबा का हमारे सिर पर भी हाथ है, हाथों में भी हाथ है, बाबा का साथ है। कभी यह नहीं कहना कि मैंने किया, बाबा ने कराया, जिसका साथ है उसका नाम लो, तो हाथ ठीक काम करेगा। पांव ठीक जगह जायेगा। जहाँ कमाई होगी वहाँ कदम होगा। सिर पर हाथ होगा तो दिमाग ठण्डा होगा, गर्म नहीं होगा। स्वभाव सरल होगा। बाबा का हाथ उसके सिर पर है जो श्रीमत पर चलते हैं।

श्रेष्ठ पद की जो सतयुगी प्राप्ति है, वह चिन्ह उसमें दिखाई पड़ते हैं जिसमें अहम भाव और वहम भाव नहीं है। अहम भाव थोड़ा भी है तो रूहानियत और बाबा से जो प्राप्ति है उसकी भासना नहीं आती है। भगवान से पाया हुआ दे रहे हैं, अहम भाव में वह वायब्रेशन किसी को नहीं मिलेगा। सूक्ष्म वहम भाव की जो अपने लिए या दूसरों के लिए नेचर है कि ऐसे हुआ होगा, इस वहम की बीमारी का इलाज तो कोई है नहीं। उसकी कोई दवाई नहीं है, हल नहीं है। तो प्रेजन्ट समय न अपने लिए वहम हो, न दूसरों के लिए। हमको क्या जरूरत है बुद्धि चलाने की!

तो अतीन्द्रिय सुख में रहकर सबको ऐसे सुख का अनुभव कराने वाली आत्मा ऐसी छोटी-छोटी बातों में समय नहीं वेस्ट करती है। छोटी बात हो या मोटी, उसमें समय बहुत वेस्ट जाता है। संगम का समय बहुत अमूल्य है इसलिए ध्यान रखना है कहीं भी वेस्ट न जाये। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन (मधुर महावाक्य)

प्यारे सबके बनो, प्रिय एक बाबा को बनाओ तो सब तुम्हारे प्यारे रहेंगे

(1999)

1) प्यारे बाबा ने हमें योगी भव का सहज स्वत: ही वरदान दिया है। बाबा कहते - अब तुम सब मेरे बच्चे हो मैं तुम सब बच्चों का प्यारा बाबा हूँ, तुम मेरी सजनियां हो मैं तुम्हारा साजन हूँ। तुम मेरे हो, मैं तेरा हूँ, तुम सब बच्चों को मैं अपने साथ ले चलने आया हूँ, और मैं देख रहा हूँ कि कैसे तुम मेरे बच्चे मेरे साथ घर की ओर दौड़ रहे हो। प्यारा बाबा आज आप सभी के बीच है और एक-एक बच्चे को मीठी-मीठी रुहानी दृष्टि दे रहा है। आप सबसे प्यारा बाबा बहुत मीठी-मीठी रुह-रिहान कर रहा है। आपके पुरुषार्थ को, हिम्मत को, दिल को देख बाबा आप सबको बहुत-बहुत प्यार से गले लगा रहा है। अपनी गोदी में छिपा रहा है। क्यों? क्योंकि आपने कहा है हमारा एक बाबा दूसरा न कोई।

2) बाबा आप सबको अपने लाइट की किरणें पांव से चोटी तक दे रहा है। आपको अपनी शीतल दृष्टि से, शीतल बना रहा है। यह अनुभव होगा कि माया ने गर्म बनाया, बाबा अति शीतल बना रहा है। योगी की वाणी, काया, स्वभाव, संस्कार सब शीतल होते इसलिए इस ज्ञान अमृत को पीने से शीतल बन जाते क्योंकि बाबा हमारा बहुत-बहुत मीठा, प्यारा, शीतल है।

3) बाबा को तरस के साथ, रहम के साथ बड़ी करुणा के भाव आ रहे हैं। आप सब इस कलियुगी दुनिया से बचकर, दौड़कर बाबा के पास आये, आप सबने अपने दिल में सच्चा बाबा बिठाया है। कई बच्चे हैं जो बाबा के ऊपर अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार हैं, सच्चे पुरुषार्थी हैं, कई हैं जो यह नहीं समझते कि हम इस इन्द्रप्रस्थ के सच्चे देवतायें हैं इसलिए अपनी वृत्तियों में लापरवाह हैं।

4) जिन्हें देह-अभिमान है, रावण की तरफ बुद्धि है वह और ही अपनी बुद्धि में बुराईयों को लाते, कई तो अपना किचड़ा बाबा को देकर शीतल हो रहे हैं, कई फिर बुरे वायब्रेशन रखते हैं। जो आपके साथ छोटी या बड़ी बहनें हैं वह आपकी माँ हैं। भले वह छोटी बच्चियां हैं लेकिन आपकी माँ के समान हैं। वृत्ति में रहे कि हम सब एक बाप के बच्चे हैं, हम छोटे बच्चे हैं, छोटे लाल हैं, वह हमारी माँ हैं। चाहे छोटी हैं चाहे बड़ी हैं। आप सबको माँ देखो। माँ देखेंगे तो आपके अशुद्ध संस्कार समाप्त हो जायेंगे। वृत्ति-दृष्टि शुद्ध हो जायेगी।

5) बाबा हमारा प्राणेश्वर है, एक बाबा सभी सम्बन्धों का दाता है। यह जो सवाल है हमारी पुरानी आदतें नहीं मिटती - तुम इन सब बातों को सोचना छोड़ दो। माया भल तूफान लाये, तुम्हें उसके बस नहीं होना है, तुम बाबा के सर्व सम्बन्धों के रस में लीन रहो। बाबा ''हमारा मीठा बाबा है'' - कभी इस सम्बन्ध का रस लो, कभी उसे प्यारा सखा बनाओ, दिल की बातें उससे करते रहो तो देखो वह कितना बहलाता है। कभी उसे साजन के रूप में देखो, कभी उसे बेटा बना लो, उस पर सारा तन-मन-धन स्वाहा कर दो। कोई दिन धर्मराज के रूप से देखो... ऐसे एक-एक दिन एक-एक सम्बन्ध का रस लो, उसी सम्बन्ध से उससे रुहरिहान करो तो दैहिक सम्बन्धों की आकर्षण खत्म हो जायेगी। पुराने सब संस्कारों को समाप्त करने का साधन ही है - सर्व सम्बन्धों का रस एक बाबा से लो।

6) बाबा ने हम बच्चों को कोई हठयोग नहीं सिखाया है लेकिन अमृतवेले उठ बाबा से शक्ति जरूर लो। शक्ति प्राप्त हुई तो पिछले सब संस्कार खत्म हो जायेंगे। अकेले बन, अकेले में, अकेले बाबा को याद करो। अपनी पढ़ाई में मस्त रहो। यह मुरली, यह ज्ञान रत्न आपको बहुत-बहुत मदद करेंगे। पढ़ाई से बहुत-बहुत प्यार रखो।

7) योगी का अर्थ ही है नियम और संयम, जितना अपने को मर्यादाओं में रखेंगे उतना अपनी मस्ती में मस्त रहेंगे। दूसरा क्या खाता, कैसे रहता, वह नहीं देखो। अपनी मौलाई मस्ती में मस्त रहो तो अश्लीलता पर नज़र जायेगी ही नहीं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को देखो। हमारे वह नयन बाबा ने निकाल दिये - मेरे तो दिव्य नयनों में अपना प्यारा बाबा बसता, स्वर्ग बसता।

8) जैसे परीक्षा के समय पढ़ाई पर ध्यान रहता है, ऐसे समझो अब हमें बाबा के घर जाना है, सम्पन्न होना है। हमारे अब परीक्षा के दिन चल रहे हैं। यह हमारा एक्जामिन है कि हमें बाप के समान सम्पन्न बनना है। हमें अपने सभी पिछले खाते योग से खत्म करने हैं। हमें बाबा से नई दुनिया के लिए नम्बरवन प्राइज लेनी है। हमें विनर बनना है, उसके लिए पेपर है मायाजीत जगत जीत बनने का। अच्छा!

ओम् शान्ति।